आई.सी.डी.एस.कार्यक्रम

जिला मेडक,आंध्र प्रदेश में पूर्व-स्कूल शिक्षा की समीक्षा

'मेडक ई.सी.ई. इनीशिएटिव' टीम, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन

प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखरेख तथा शिक्षा (आजीवन सीखने के लिए और आधारभूत सामाजिक मूल्यों को आत्मसात करने के लिए) नितान्त आवश्यक बुनियादें रखती है और इसका प्रभाव शिक्षा के प्राथमिक स्तर की सफलता पर भी पड़ता है। वैज्ञानिक साक्ष्यों के अनुसार, प्रारम्भिक वर्षों में मस्तिष्क का विकास ही वह मार्ग होता है जो शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य, सीखने तथा व्यवहार को जीवन भर प्रभावित करता है। यह वैज्ञानिक रूप से बार–बार सिद्ध हुआ है कि प्रारम्भिक शिक्षा की खामियाँ और बाद के स्कूल के वर्षों में उन खामियों को दूर करने के लिए किए गए प्रयास परस्पर सीधे समानुपाती होते हैं।

यह बेहद जरूरी है कि शिक्षा की गुणवत्ता में ध्यान बच्चे के सर्वांगीण विकास पर केन्द्रित हो। संज्ञानात्मक कौशलों पर जरूरत से ज्यादा जोर देने से गैर–संज्ञानात्मक कौशलों का विकास जीवन भर के लिए बाधित हो जाता है।

शोध कहता है कि 0–8 वर्ष का समय मस्तिष्क के बढ़ने और विकसित होने की प्रमुख आयु होती है, बशर्ते कि उसे बच्चे के पारिस्थितिक तंत्र में शामिल सभी लोगों के द्वारा आवश्यक उत्प्रेरणा, अवसर तथा सहायता प्रदान की जाए।

आई.सी.डी.एस. (इंटीग्रेटेड चाइल्ड डेवेलपमेंट सर्विसेज – एकीकृत बाल विकास सेवाएँ) योजना, जो छोटे बच्चों को स्वास्थ्य, पोषण तथा मनोवैज्ञानिक–सामाजिक उत्प्रेरणा प्रदान करने के लक्ष्य वाला शायद संसार का सबसे बड़ा कार्यक्रम है, प्रारम्भिक बाल शिक्षा का समर्थन करने वाले तथा बाल अधिकारों की सुरक्षा करने वाले भारतीय संविधान के प्रावधानों, राष्ट्रीय विधानों और अन्तर्राष्ट्रीय घोषणाओं का अनुसरण करने के लिए 2 अक्तूबर 1975 को आरम्भ हुई थी। परिणामस्वरूप इसके प्रायोगिक चरण में 33 परियोजनाएँ प्रारम्भ की गई थीं और वर्तमान में देश भर में लगभग 7000 आई.सी.डी.एस. परियोजनाएँ चल रही हैं। यह कार्यक्रम तीन दशक से भी अधिक समय से विश्व बैंक की सहायता से चलाया जा रहा है। आई.सी.डी.एस. को क्रियान्वित करने की प्राथमिक संस्थाएँ आँगनवाड़ी केन्द्र हैं।

बताया जाता है कि ग्रामीण भारत के लगभग 73% बच्चे देश भर में फैले तकरीबन 140 लाख आँगनवाड़ी केन्द्रों में नामांकित हैं। दूसरी ओर, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में निजी स्कूलों के विस्तार के चलते, सम्पन्न परिवारों के बच्चे, 3 वर्ष जितनी छोटी उम्र से शुरू करते हुए, किसी अन्य प्रकार की ई.सी.सी.ई. (प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देख–रेख तथा शिक्षा) सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भी निजी पूर्व–स्कूल काफी सक्रिय होकर तेजी से फैले हैं।

स्कूल शिक्षा पर चल रहे अपने कार्यक्रम के स्वाभाविक विस्तार के रूप में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगी कार्यक्रमों तथा सुधार–प्रयासों का अन्वेषण करने में दिलचस्पी है। किसी क्षेत्र में कार्यक्रमों तथा सुधार–प्रयासों को प्रारम्भ करने से पहले उस क्षेत्र की शोध पर आधारित समझ हासिल करने के फाउण्डेशन के दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए, आंध्र प्रदेश के मेडक जिले में प्रारम्भिक बाल्यावस्था प्रयास ने अन्वेषण के लिए एक अध्ययन किया। यह अध्ययन प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ई.सी.ई.) के क्षेत्र में आँगनवाड़ी केन्द्रों (ए.डब्ल्यू.सी.) की भूमिका को समझने के लिए किया गया था। आँगनवाड़ी केन्द्र, जिनकी स्थापना महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के एकीकृत बाल विकास सेवाएँ कार्यक्रम के अन्तर्गत की गई,

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी प्रयास की प्राथमिक वाहक हैं। आँगनवाड़ी केन्द्रों के कामकाज की जाँच–पड़ताल करने के द्वारा यह अध्ययन प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र की चुनौतियों में से कुछ को समझने का प्रयास करता है। आंध्रप्रदेश में 387 परियोजनाओं के अन्तर्गत 86000 आँगनवाड़ी केन्द्र हैं। मेडक जिले में 11 परियोजनाओं के अन्तर्गत 3041 आँगनवाड़ी केन्द्र हैं। आंध्रप्रदेश के मेडक जिले के 14 मण्डलों में स्थित 270 आँगनवाड़ी केन्द्रों में यह अध्ययन किया गया।

इस अध्ययन का विश्लेषण और व्याख्या आँगनवाड़ी केन्द्रों के कामकाज के बारे में इकट्ठी की गई गुणात्मक तथा परिमाणात्मक जानकारी के आधार पर की गई है। परिमाणात्मक जानकारी इस अध्ययन में शामिल 270 आँगनवाड़ी केन्द्रों के पूरे समूह से एकत्रित की गई। इसके अलावा, पूरे बड़े समूह में से 78 आँगनवाड़ी केन्द्रों को उनके कामकाज तथा ई.सी.ई. गतिविधियों के विस्तृत निरीक्षण के लिए चुना गया। इकट्ठी की गई समग्र जानकारी को तीन मोटी श्रेणियों में संकलित किया जा सकता है :

1. आँगनवाड़ी केन्द्रों तथा उनकी कार्यकर्ताओं की विशेषताएँ;
2. आँगनवाड़ी केन्द्रों के लाभार्थियों की विशेषताएँ;
3. आँगनवाड़ी केन्द्रों की प्रभावशीलता का आकलन।

1. आँगनवाड़ी केन्द्रों तथा उनकी कार्यकर्ताओं की विशेषताएँ

अधिक संख्या ऐसे आँगनवाड़ी केन्द्रों की है जिनमें पर्याप्त भौतिक अधोसंरचना (बुनियादी सुविधाओं) का अभाव है। अध्ययन किए गए आँगनवाड़ी केन्द्रों में से केवल 22% उनके स्वयं के परिसर में चल रहे हैं। अधिकांश केन्द्रों में बुनियादी सुविधाएँ, जैसे शौचालय, स्वयं का जलस्रोत आदि भी नहीं हैं। अधिकांश केन्द्रों में उपलब्ध जगह को खाद्य–वस्तुओं तथा अन्य सामग्री के भण्डारण के लिए ले लिया गया है। आमतौर पर पूर्व–स्कूल की गतिविधियों के लिए अलग से कोई स्थान चिन्हित नहीं किया गया है। तालिका 1 देखें।

तालिका 1

सुविधा सूचकांक में अधिक अंक होने का मतलब ज्यादा सुविधाएँ होना है। अधिकतम सम्भव सूचकांक 11 था।

आँगनवाड़ी सुविधा सूचकांक	मुख्य आँगनवाड़ी केन्द्रों का :	लघु आँगनवाड़ी केन्द्रों का
0	2	36.36
1	12.8	22.73
2	14	22.73
3	25.2	9.09
4	25.6	0
5	13.6	9.09
6	4	0
7	2	0
8	0.8	0
कुल	100	100

आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं में से लगभग 12% मैट्रिकुलेशन (दसवीं कक्षा) पास होने की न्यूनतम आवश्यक शैक्षिक योग्यता को पूरा नहीं करतीं। उनमें से केवल 55.81% मैट्रिकुलेशन पास हैं, और 2.33% पढ़ने और लिखने में पर्याप्त सक्षम नहीं हैं, जबकि कुछ केवल अपना नाम भर लिख सकती हैं। तालिका 2 देखें।

आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण में 26 कार्यकारी दिनों का प्रारम्भिक प्रशिक्षण तथा एक सप्ताह का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (रिफ्रेशर कोर्स) शामिल रहते हैं। प्रशिक्षण के 26 दिनों में से ई.सी.सी.ई.के हिस्से के लिए 4 दिन रखे जाते हैं। समग्र रूप से देखें तो प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यन्त अपर्याप्त है और पुनश्चर्या पाठ्यक्रम शायद ही कभी आयोजित किया जाता है।

तालिका 2

सामान्य शिक्षा (कार्यकर्ताओं का शैक्षिक स्तर):

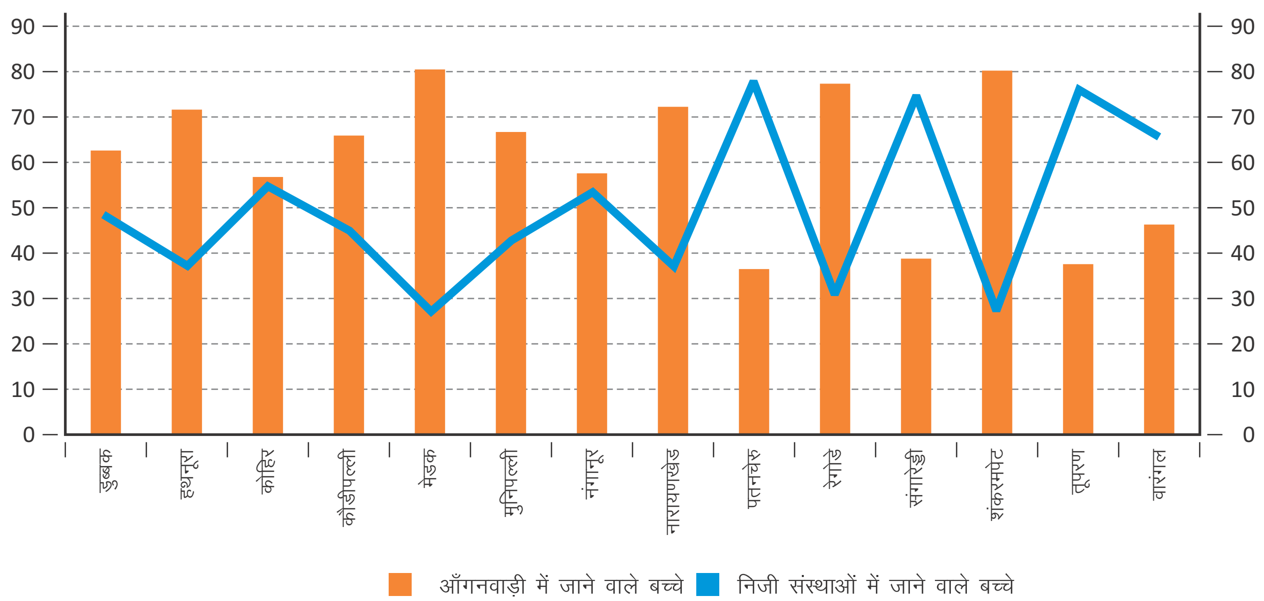
1. 5वीं कक्षा तक	0.39
2. 7वीं कक्षा तक	1.55
3. मैट्रिकुलेशन फेल	10.08
4. मैट्रिकुलेशन पास	55.81
5. इंटरमीडिएट पास	19.38
6. स्नातक	10.47
7. साक्षर मात्र एवं निरक्षर	2.33
कुल	**100**

2. आँगनवाड़ी केन्द्रों के लाभार्थियों की विशेषताएँ

आँगनवाड़ी केन्द्रों में नामांकन स्थान परिवर्तन के साथ बहुत बदलता रहता है। शहरी इलाकों तथा बहुत दूरदराज के इलाकों में यह सबसे कम होता है। नीचे दिया गया ग्राफ अलग–अलग मण्डलों में नामांकन की स्थिति दर्शाता है। परन्तु, एक ही मण्डल के भीतर भी इसमें बदलाव होते हैं, क्योंकि कुछ गाँव मण्डल मुख्यालय और शहर से बहुत दूर होते हैं, जबकि कुछ उसके नजदीक होते हैं और इसलिए तुलनात्मक रूप से उनका अधिक शहरीकरण हो गया होता है। उन गाँवों में नामांकन अधिक होता है जो सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से ज्यादा कमजोर होते हैं। ग्राफ 1 देखें।

ग्राफ 1

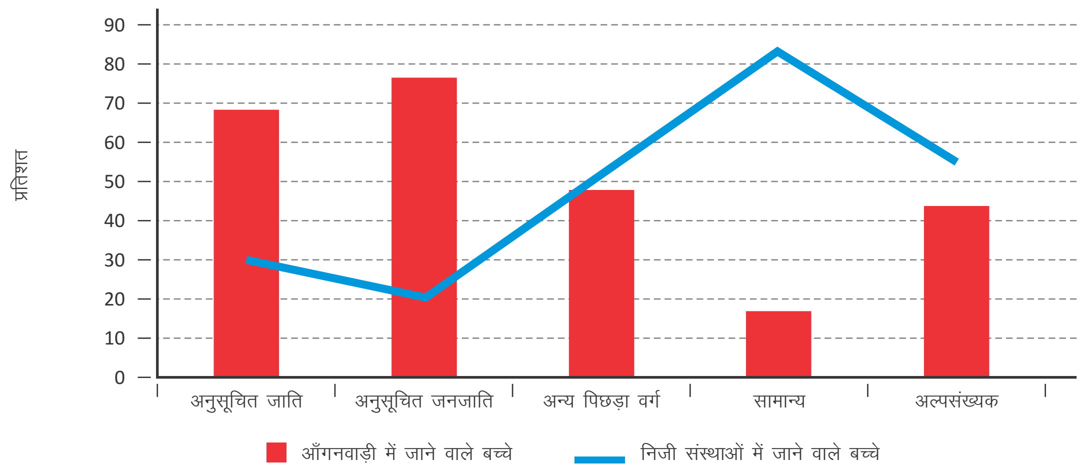
मण्डलों के अनुसार नामांकन की दरें



जो बच्चे पूर्व–स्कूलों में हैं, उनमें से अ–साक्षर माता–पिता वाले परिवारों के बच्चों की आँगनवाड़ियों में नामांकन दर अधिक है। बेहतर सामाजिक–आर्थिक स्थितियों वाले परिवारों के अपने बच्चों को आँगनवाड़ी केन्द्रों में भेजने की सम्भावना कम रहती है। साक्षर माता–पिता वाले बच्चों की नामांकन दरें आँगनवाड़ी केन्द्रों की अपेक्षा निजी स्कूलों में अधिक है। किसी भी प्रकार के पूर्व–स्कूल (आँगनवाड़ी केन्द्र या निजी) में अकुशल मजदूरों के बच्चों की नामांकन दरें कम हैं। इसके अलावा, 3–6 वर्ष के आयु समूह में से 30% बच्चे वर्तमान में किसी भी पूर्व–स्कूल (सरकारी, निजी या आँगनवाड़ी केन्द्र) में नामांकित नहीं हैं। नीचे दिया गया ग्राफ 2 देखें।

ग्राफ 2

सामाजिक श्रेणी के अनुसार आँगनवाड़ियों में नामांकन

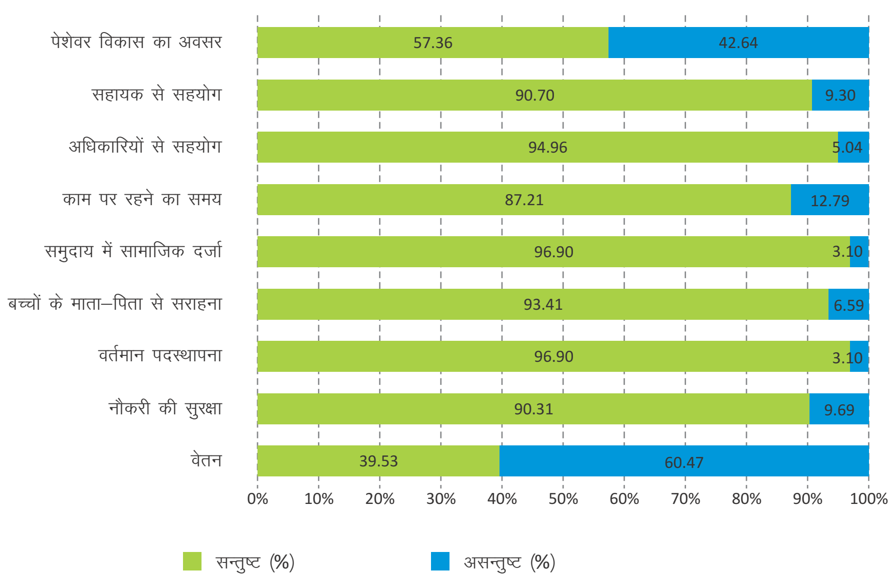


3. आँगनवाड़ी केन्द्रों की प्रभावशीलता

यह स्पष्ट है कि सभी आँगनवाड़ी कार्यकर्ता अपनी नौकरियों से सन्तुष्ट नहीं हैं। परन्तु, वेतन तथा पेशेवर विकास उनके असन्तोष के ज्यादा प्रमुख पहलू हैं। स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि सक्षम ढंग से काम करने के लिए उन्हें और अधिक सहायता की आवश्यकता है। नीचे दिया गया ग्राफ 3 देखें।

ग्राफ 3

आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं में सन्तोष की भावना

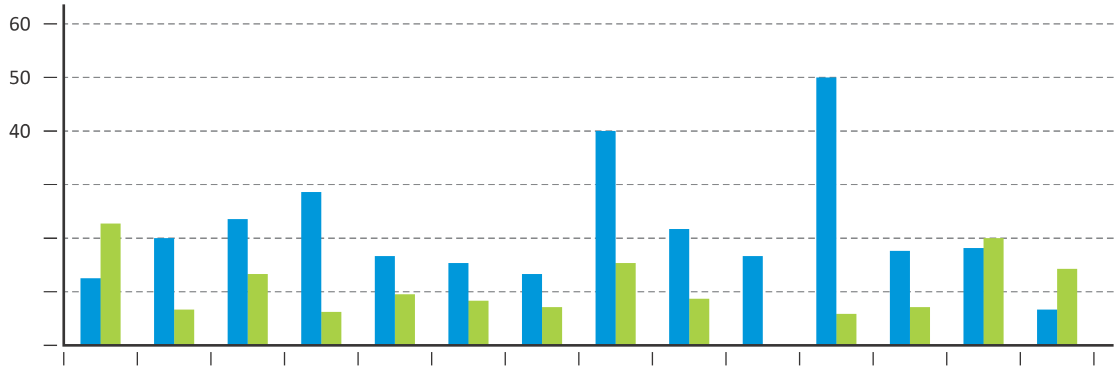


मेडक की आँगनवाड़ी व्यवस्था में बच्चों की अनियमित उपस्थिति एक बड़ी समस्या है। (3–6 वर्ष के आयु समूह के) नामांकित विद्यार्थियों में से केवल 43% ही नियमित रूप से आँगनवाड़ी केन्द्रों में उपस्थित रहते हैं।

कार्यकर्ताओं की अनुपस्थिति भी चिन्ता का विषय है। इस अध्ययन के लिए सूचना देकर किए गए दौरों के दौरान औसतन 22% कार्यकर्ता अनुपस्थित थीं। मेडक के अलग–अलग मण्डलों में भी अनुपस्थिति में बड़े अन्तर हैं। नीचे दिया गया ग्राफ 4 विभिन्न मण्डलों में आँगनवाड़ी कार्यकर्ता और आँगनवाड़ी सहायक की अनुपस्थिति के इस अन्तर को दर्शाता है।

ग्राफ 4

आँगनवाड़ी कार्यकर्ता तथा आँगनवाड़ी सहायक की अनुपस्थिति



	डुब्बक	हथनूरा	कोहिर	कोडीपल्ली	मेडक	मुनिपल्ली	नंगानूर	नारायणखेड	पतनचेरु	रेगोड	संगारेड्डी	शंकरमपेट	तूपरण	वारंगल
कार्यकर्ता की अनुपस्थिति (%)	12.50	20.00	23.53	28.57	16.67	15.38	13.33	40.00	21.74	16.67	50.00	17.65	18.18	6.67
सहायक की अनुपस्थिति (%)	22.73	6.67	13.33	6.25	9.52	8.33	7.14	15.38	8.70	0.00	5.88	7.14	20.00	14.29

कार्यकर्ता की अनुपस्थिति (%) सहायक की अनुपस्थिति (%)

अनेक कार्यकर्ता निर्धारित कार्य–समय का या ई.सी.ई. गतिविधियों की समय सारिणी का पालन नहीं करतीं। कुछ चुने हुए आँगनवाड़ी केन्द्रों का गुणात्मक निरीक्षण दर्शाता है कि आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की अनुपस्थिति का अन्य सेवाओं की अपेक्षा पूर्व–स्कूल शिक्षा से जुड़ी हुई गतिविधियों पर ज्यादा असर पड़ता है।

हालाँकि आँगनवाड़ी कार्यकर्ता स्वयं अपनी रिपोर्ट में कहती हैं कि वे उच्च स्तरीय पूर्व–स्कूल शिक्षा की गतिविधियाँ चलाती हैं, पर इस अध्ययन के एक हिस्से के रूप में किए गए गुणात्मक निरीक्षणों से उनके इस दावे की पुष्टि नहीं होती। ये गतिविधियाँ मुख्य रूप से बातचीत, तुकान्त पदों (राइम्स) तथा गीतों, खेलों तथा अच्छी आदतों से सम्बन्धित होती हैं। लगभग 90% आँगनवाड़ी कार्यकर्ता इन गतिविधियों को प्रतिदिन संचालित करती हैं। आँगनवाड़ी कार्यकर्ता इन गतिविधियों का संचालन करने में कोई कठिनाई होने का उल्लेख नहीं करतीं। सृजनात्मक गतिविधियाँ, जिनमें कलाएँ तथा हस्तकौशल शामिल रहते हैं, कम नियमितता से, 70% आँगनवाड़ियामें लगभग सप्ताह में एक बार, होती हैं। लगभग 50% कार्यकर्ता सूचित करती हैं कि वैज्ञानिक ज्ञान तथा सांस्कृतिक बोध से जुड़ी हुई गतिविधियाँ संचालित करना सम्भव नहीं है। 50% कार्यकर्ता सूचित करती हैं कि वे कार्य पुस्तिकाओं (मॉड्यूल्स) तथा शिक्षण पुस्तिकाओं का प्रतिदिन अनुसरण करती हैं, जबकि अन्य 38% सप्ताह में एक बार ऐसा करने की सूचना देती हैं।

माताओं–पिताओं में से 41% कहते हैं कि वे आँगनवाड़ी केन्द्रों से अपने बच्चों के लिए अच्छा शिक्षण पाने की अपेक्षा कर रहे हैं। हालाँकि केवल 5% माता–पिता बच्चे की शिक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए आँगनवाड़ी केन्द्रों पर जाते हैं,

जिसका मतलब है कि उनमें माताओं–पिताओं की भागीदारी नगण्य है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के परिणाम पूर्व–स्कूल शिक्षा की माँग तथा गाँवों और माताओं–पिताओं की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों के बीच में कुछ सम्बन्ध होना दर्शाते हैं। इस सम्बन्ध की सही–सही प्रकृति को समझने के लिए और अधिक खोजबीन करने की आवश्यकता है। समाज के उन वर्गों की ओर से आँगनवाड़ी केन्द्रों के लिए अधिक माँग है जो सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से ज्यादा कमजोर हैं। इसका आँगनवाड़ी केन्द्रों के प्रावधान, उन्हें चलाए रखने तथा उनके विकास पर प्रभाव पड़ सकता है और किन्हीं भी सुधार–प्रयासों की योजना बनाते समय इन निहितार्थों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

कार्यकर्ताओं की अधिक अनुपस्थिति देश भर में स्कूलों के शिक्षकों की अनुपस्थिति की दरों के ही समान है। यह दर्शाता है कि इसमें कुछ ढाँचागत समस्याएँ हो सकती हैं जिनका अलग तरीके से समाधान किए जाने की जरूरत है। आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को ई.सी.ई. में बहुत थोड़ा प्रशिक्षण दिया जाता है। एक दयनीय शुरुआत (नियुक्ति के समय कुल 4 दिनों का प्रारम्भिक प्रशिक्षण दिया जाना) और बाद में खराब सहायता व्यवस्था के चलते ई.सी.ई. की गतिविधियों को चलाए रखने के लिए बहुत सीमित गुंजाइश मिलती है। किसी भी नए प्रशिक्षण प्रयास को आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को सहायता प्रदान करनें में निरीक्षकों तथा बाल विकास परियोजना अधिकारियों (सी.पी.डी.ओ.) की जरूरतों और अड़चनों पर भी ध्यान देना होगा। **अनुवाद** : भरत त्रिपाठी

References

1. ICDS-IV Project A handbook (2007) Ministry of Women and Child Development, Government of India.
2. Quality Standards of ECEE (Draft) Women and Child development, Government of India.
3. NCF Position paper (NCERT) on Early Childhood Education
4. National Early Childhood Care and Education Policy (Draft), Ministry of Women and Child Development GOI.
5. Jonanthan Crane and Mallory Barg (2003). Do Early Childhood Intervention Programmes Really Work?;Coalition for Evidence-Based Policy.
6. http://childdevelopmentinfo.com/child-development/piaget

Abbrevations

AWC : Anganwadi Center
AWH : Anganwadi Helper
AWW : Anganwadi Worker
ECE : Early Childhood Education
ICDS : Integrated Child Development Service
CDPO : Child Development Project Officer